Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति

डॉ. प्रियंकाबहन अमृतलाल कापडीया

एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संक्षेप

संपूर्ण हिन्दी साहित्य में उपन्यास ही एक ऐसी विधा है जिसमे मानवीय धारणाओं, सरकारी अनुभूतियों, अस्थाओं, बाकांक्षाओं, सामाजिक मृत्यों के परिवर्तित स्वरूपों, मानव समाज के उत्थान-पतन की संपूर्ण गाथाओं तथा मानव चेतना के नवीन स्वरों का अवशेष इतिहास सम्मा तथा यविध्यपूर्ण समापित है। मानवजीवन के सत्यान्वेषण तथा पथार्थिक स्थितियों की सभ्य रूप से वैज्ञानिक व्याख्या उपन्यास में ही संभव है। उपन्यास का उद्भव और विकास दोनों ही यथार्थ की प्रतीति पर हुआ है। उपन्यास के महत्त्व और उपयोगिता के संदर्भ को विद्वानों ने बहुत महत्व दिया है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी ने "मानचरित्र के रहस्योद्घाटन" को ही उपन्यास का मूल उद्देश्य कहा है। एसे ही श्रेष्ठ उपन्यासकार व आलोचक राजेन्द्र यादव के उपन्यासों की जाँच कर उनके उपन्यासों निर्मित सामाजिक चेतना एवं सामाजिक स्थिति दर्शाई गई है, प्रस्तुत खास कर राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में निर्मित महिलाओ कि सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

संकेतशब्द: राजेन्द्र यादव, उपन्यासों, स्त्री की सामाजिक स्थिति

1. आमुख

राजेन्द्र यादव ने स्त्री और दलित विमर्श को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया है और इसलिए वे हमेशा विवाद का विषय रहे हैं. इसी कारण मैंने शोध विषय के रूप में राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में महिला पात्रों के विषय को चुना। इसका मुख्य कारण विभिन्न पृष्ठभूमि की महिलाओं की वास्तविकता पर समाज का ध्यान आकर्षित करना है। यादव के उपन्यासों में महिलाओं की समस्याओं, उनकी घुटन और हताशा को प्रमुखता से दर्शाया गया है। अपने उपन्यासों के माध्यम से राजेन्द्र यादव महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने तथा महिलाओं के आंतरिक स्वभाव को अभिव्यक्त करने में सफल रहे हैं।

रथ को सही ढंग से चलाने के लिए दोनों पहियों का एक समान होना आवश्यक है। इनमें से कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होना चाहिए. छोटा पहिया धीरे-धीरे कमजोर होकर टूट जाता है। इन पहियों की तरह, समाज के रथ

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

को चलाने के लिए पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इस मामले में डॉ. शीला रजवार का मानना है कि एक स्वतंत्र, बुद्धिमान और संपूर्ण पुरुष को एक स्वतंत्र, बुद्धिमान और संपूर्ण महिला के साथ रहना चाहिए। कोई देवी नहीं, कोई इंसान नहीं, कोई स्वाभिमानी नहीं, कोई कन्या नहीं, कोई बुद्धिजीवी नहीं, कोई लंपट नहीं, कोई पर्दा रानी नहीं, कोई बेशर्म नहीं। सभ्यतागत विकास की प्रक्रिया में पुरुषों और महिलाओं को वास्तव में दो पहियों की तरह काम करना होगा। लेकिन पुरुष नहीं चाहता था कि महिला उससे आगे निकल जाए, इसलिए उसने उसे कैद कर लिया, उसके शरीर को बीच में रख दिया और उसके चारों ओर अनुष्ठान स्थापित किए, जो बाद में एक परंपरा बन गई। यह महिलाओं के व्यक्तिगत विकास और समाज की प्रगति में बाधक बन गया है। किसी भी महिला को सिर्फ उसके शरीर तक ही सीमित रखना गलत है। वह समाज में सम्मान की पात्र है. उनकी रिहाई के लिए सुमित्रानंदन पंत के शब्दों का जिक्र करना जरूरी है।

2. अनुसंधान के उद्देश्य

- श्रेष्ठ उपन्यासकार व आलोचक राजेन्द्र यादव के उपन्यासों को जांचना
- राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति की जाँच करना

3. राजेन्द्र यादव: एक परिचय

किसी भी व्यावत के क्तित्व की निर्मित में बाल्यकाल और वैशोर्य का स्वले अधिक महत्व होता है। राजेन्द्र यादव के बाल्यकाल और कैशोर्य के जीवन के कुछ पहलु इस प्रकार है-

राजेन्द्र यादव का जन्म 28 अगस्त सन् 1929 में आगरा में हुआ था । उनके जीवन का पर्याप्त काल बागों के राजा की मण्डी में बीता। इनके पिता व्यवसाय के उाक्टर थे, किन्तु ऐसा नहीं था कि साहित्य के प्रति उनकी च न रही हो। महित्य के अच्छे पारधी थे।उन्होंने चन्द्रकान्तापने के हिन्दी सीखी थी।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

लेवन के लिए समर्पित राजेन्द्र यादव के जीवन के इस प्रसंग में हमारे मन मैं सहज ही एक प्रश्न उभरता है कि राजेन्द्र यादव की जीविका का आधार क्या है ? लेखक के लिए हमारे देश में लेखन मात्र पर निर्भर रहना कुछ कठिन है। प्राय: बेशक लेवन के लिए कूल आजीविका को सोच लेता है। "देवताओं की मूर्तियाँ" कहानी के लेखक की तरह चाट बेचकर भी माने व्यवसाय में लेना- नकृतना को खोजने का प्रयत्न नहीं करता। तैयन के लिए ध्यापन एवं पपादन की आजीविका अधिक सजातीय बाजीविका है। एम.ए. उत्तीर्ण होने के बाद राजेन्द्र यादव चाहते तो सहज ही प्राध्यापक का रुकते थे। पं. जगन्नाथ तिवारी ने उन्हें अपने विभाग में लेना चाहा था। राचन्द्र यादव तिवारी जी केही विद्यार्थी थे। विद्यार्थी भी पैसे जिन्होंने एम.ए. की परीक्षा प्रथम में उत्तीर्ण की थी और तब तक जिन्हें बैंक के रूप में प्रसिद्धि भी मिल चुकी थी। स्वाभिमानी स्वभाव के कारण राजेन्द्र यादव नौकरी के पड़े में नहीं पड़ना घाटते थे, फिर भी ऐसी बात नहीं को उन्होंने नौकरी की ही नहीं। उन्होंने कुछ दिनों के लिए जियो सर्वे में हिन्दी व्यापक का अर्थ किया था।

राजेन्द्र यादव को उपन्यासों की प्रेरणा को ने परिवार, समाज, राजनीतिक और सात्यिक अभिर्शयों से शरीर में व्यतीत हुआ, जल माता-पिता से हुई। बाल का वजन मथुरा चौंके संस्कार प्राप्त हुए। पिता "अलफ तेला", "दारताने समीर-हम्बा", "चन्द्रकान्ता- संत से पढ़कर सुनाया करते थे। माँ के साथ रामायण, महाभारत, सागर पढ़ी। उनके नाना जी मराठी-गुजराती पढ़ने और कहानियाँ लिने की प्रेरणा देते रहे। मन में भिक्खी चाटवाला और की महाराज भी कहा- निय नाते थे। बाद में उनके सारा आकाशः 1959, उखड़े हुए लोगः 1956, कुलटाः 1958, शह और मातः 1959, अनदेखे अनजान पुलः 1963, एक इंच मुस्कान (मन्नू भंडारी के साथ) 1963, मन्त्रविद्धा: 1967 और एक था शैलेन्द्र: 2007 में प्रकाशित कि गई है। प्रस्तुत अनुसंधान में उपरोक्त उपन्यासों में राजेन्द्र यादव के लगभग सभी उपन्यासो का में चित्रित स्त्री की सामाजिक स्थिति की जाँच कि गई है, जो इस प्रकार है:

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

5. स्त्री की सामाजिक स्थिति

यादव के उपन्यासों में महिलाओं की समस्याएँ, उनकी घुटन और निराशा प्रमुखता से आती है। अपने उपन्यासों के माध्यम से राजेंद्र यादव ने महिलाओं की उन्नति और उनकी आंतरिक भावना की अभिव्यक्ति के लिए सफलतापूर्वक काम किया। राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में चित्रित कि गई स्त्री की सामाजिक स्थिति इस प्रकार है-

5.1 पारिवारिक स्थिति

राजेंद्र यादव ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक रिश्तों में आ रही गिरावट को चित्रित करने का प्रयास किया। पारिवारिक रिश्तों की संवेदनशीलता उनके उपन्यासों का मुख्य गुण दर्शाती है। आधुनिकीकरण की तीव्र गति के साथ पारिवारिक विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। आधुनिकता के कारण घर-परिवार और रिश्तों में बदलाव आ रहे हैं। इससे न केवल पारंपरिक रूप से प्रचलित समस्याओं का समाधान हुआ, बल्कि समय के साथ कई समस्याएं भी सामने आईं। साथ ही समस्याओं का दायरा भी बढ़ गया है. आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए नये मूल्यों ने संयुक्त परिवार के विघटन को तेज कर दिया, जिससे पारिवारिक रिश्तों में तनाव पैदा हो गया। महँगाई, बेरोज़गारी, यांत्रिक ठंड, संसाधनों की कमी आदि के कारण लोगों में स्वार्थ की भावना बढ़ने लगी। . लोग एक-दूसरे के साथ केवल स्वार्थी संबंध रखने लगे। परिवार और समाज में आत्मीयता का स्थान औपचारिकता ने ले लिया। ऐसे माहौल में महिलाओं को परिवार और पारिवारिक रिश्तों में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

राजेंद्र यादव ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक और पारिवारिक रिश्तों से जुड़ी समस्याओं का संवेदनशीलता और स्पष्टता से चित्रण इस प्रकार किया है-

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

- टूटी हुई शादी ।
- टूटी हुई वैवाहिक।
- बेईमानी की समस्याएँ.
- जनरेशन गैप की समस्या. वगैरह वगैरह

राजेंद्र यादव के कई उपन्यासों में विवाह विच्छेद की झलक मिलती है। विवाह विच्छेद के विषय को कुर्ता, मंत्रा वाइड और एक इंची मस्कन जैसे उपन्यासों में चित्रित किया गया है।

5.2 दाम्पत्य जीवन

उपन्यास में राजेंद्र यादव टूटे हुए विवाह की समस्याओं के साथ-साथ टूटते विवाह की समस्याओं पर भी प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के लिए। लापरवाही से बैठना, 1 इंच मुस्कुराना, खड़े होना आदि।

उपन्यास "कोरटा" में स्त्री-पुरुष की अलग-अलग रुचियों और उनके विपरीत स्वभाव के कारण विवाह टूट जाता है। श्रीमती तेजपाल शुरू से ही मेजर तेजपाल को नापसंद करती थीं लेकिन उनके परिवार ने उन्हें उनसे शादी करने के लिए मजबूर किया। श्रीमती तेजपाल अपने पति के स्वभाव और पसंद से मेल नहीं खाती हैं और एक पुराने प्रेमी के साथ भाग जाती हैं, और इस बिंदु पर उन्होंने मेजर तेजपाल को लिखे एक पत्र में अपने पति की मर्दानगी पर संदेह किया है, लेकिन मेजर इसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं। वह छटपटाने लगता है. उन्होंने चिल्लाकर कहा कि मैं भी एक आदमी हूं. मैं तुम्हें तुरंत दिखाऊंगा, मैं एक आदमी हूं। लाओ, उस औरत को लाओ, मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ... उसे पागलपन के लिए छुट्टी दे दी गई है और एक सैन्य अस्पताल में भेज दिया गया है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

उखड़े हुए लोगों में मायादेवी का देशबंधु के साथ अफेयर शुरू हो जाता है, जो उसकी शादी के बाद भी जारी रहता है। मायादेवी का पति उसे पीटता है और देशबंधु को धमकाता भी है, लेकिन मायादेवी का पति कोई विरोध नहीं करता। उससे बहस के बाद वह देशबंधु के घर आ जाती है और चार महीने तक वहीं रहती है। अंत में, पति को अपनी बेटियों की खातिर झुकना पड़ता है और देशबंधु के साथ एक सतही दोस्ती विकसित करनी पड़ती है। स्वदेश महल वास्तु देशबंधु के उद्घाटन के दौरान मायादेवी देशबंधु के साथ मिलकर अपने पति को दवा के बजाय जहर देकर मार देती है। अपनी मृत्यु से पहले, मायादेवी का पति अक्सर सूरज की ओर रुख करता था। सूरज जी, मैंने अपने कानों से सुना, आज मुझे जहर दिया जा रहा है, मुझे बचा लीजिए, सूरज जी, मुझे बचा लीजिए... लेकिन यह बेकार है। अपने पति की मृत्यु के कुछ दिनों बाद, मायादेवी को एहसास हुआ कि वह एक रखैल से ज्यादा कुछ नहीं है। वह अपनी बेटी पद्मा के साथ देशबंधु के साथ रहने लगती है।

5.3 परिवारवालों की स्वार्थी वृत्ति

यादव ने सारा आकाश के उपन्यास में परिवार में स्वार्थ के विषय को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। उपन्यास का नायक समर और नायिका प्रभा एक नवविवाहित जोड़े हैं जो एक साझा घर में रहते हैं जहाँ समर विश्वविद्यालय में पढ़ता है और प्रभा घर पर काम करती है। दोनों ही स्थितियों में आप पैसा नहीं कमा सकते। वे अपने परिवार पर निर्भर हैं और समीर का भाई धीरज कमाने वाला है, इसलिए एम्मा और बाबूजी उसकी और उसकी पत्नी की देखभाल करते हैं। वे गुजारा करने की कोशिश करते हैं लेकिन समर और उसकी पत्नी प्रभा के प्रति उदासीन रहते हैं क्योंकि समर को कोई आय नहीं होती है। उनकी जरूरतों पर ध्यान न दें. जैसे ही समर घर लौटता है, एम्मा और बाबूजी उसे चिढ़ाने लगते हैं। अर्जुन चव्हाण कहते हैं, "बाबूजी, आप एक मतलबी पिता की तरह हैं." वह अपने बेटे और बहू पर अधिक ध्यान देता है जो आय अर्जित कर रहे हैं और अपने बेरोजगार बेटे और बहू समर और उसकी बहू को घर छोड़ने के लिए कहता है। हालाँकि, जब समर, एक बेकार लड़का, एक अखबार कंपनी में काम करता है, तो उसका रवैया बदल जाता है क्योंकि वह एम्मा और बाबूजी का अधिकार चाहता है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

दोनों के प्रति उचित व्यवहार करना शुरू करें. घर में प्रभा की माँ और भाभी का प्रभा के प्रति रवैया बदल गया। प्रभा ने सबसे पहले इस बात पर ध्यान दिया। वह समर से कहता है कि हम इन मुद्दों पर बहुत बहस करते थे लेकिन अब एम्मा जे और आपकी भाभी जानबूझकर उन्हें नजरअंदाज कर रही हैं और अब एम्मा कहती हैं कि जब भी आप बात करते हैं तो वे कहते हैं कि अगर वे इसका समर्थन करते हैं तो समस्या कम हो जाएगी।. जब मेरी भाभी अपनी बेटी के लिए आइसक्रीम लेकर आईं तो मुझसे भी आइसक्रीम खाने के लिए कहने लगीं। बाबूजी भी समीर को देर से आने के लिए प्यार से डांटते हैं और जल्दी आने के लिए कहते हैं।

सारा आकाश उपन्यास एक संयुक्त परिवार का चित्रण करता है जिसमें अम्मा और बाबूजी पारंपरिक विचारों वाले हैं और बहू प्रभा आधुनिक विचारों वाली है। बाबूजी सोचते हैं कि बहू (प्रभा) को घर में घूंघट करना चाहिए, बड़ों के पास नहीं आना चाहिए और ऊंचे स्वर में नहीं बोलना चाहिए। प्रभा बड़ों के सामने नहीं जाती, पर छिपती भी नहीं। इस बात को लेकर घर में सभी लोग हंगामा कर रहे हैं। अम्मा प्रभु को डांटती है और अपनी भाभी से कहती है, यह सच है कि आपके घर में घूंघट करने का कोई नियम नहीं है, लेकिन कम से कम इस घर की परंपराओं का पालन करें। अरे, अगर तुम हमारे साथ ऐसा नहीं करना चाहते तो मत करो, लेकिन तुम्हें अपने बड़ों के सामने शर्म आनी चाहिए। ये अँधेरा क्या है? हमने उन्हें न तो देखा और न ही सुना। समुदाय में कुछ चर्चा है कि हमने जो देखा है उसने हमारे कार्यों को कलंकित किया है। अब दुनिया भर से लोग हमारे पास आएंगे, हम क्या चाहते हैं? कहो, वहाँ जाने के बाद? भाई, हमें क्या ज़रूरत है जब हम तुम्हारे साथ नंगी होकर नाचेंगी? घर में हर कोई प्रभु को डांटता है, लेकिन वह इसे छिपाती नहीं है।

5.4 वैवाहिक स्थिति

विवाह प्राचीन और आधुनिक, हर समाज का एक अभिन्न अंग है। यह कोई नई पद्धति नहीं, बल्कि पुरानी परंपरा है। इसे आदिम एवं सभ्य समाजों ने स्वीकार किया। विवाह ही एकमात्र ऐसा बंधन है जो व्यक्ति और समाज के लिए स्थिरता पैदा करता है और समाज की पहली इकाई है। इससे एक परिवार बनता है. हर देश और समाज

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

की अपनी-अपनी परंपराएं होती हैं जिनके जरिए लोग शादी के बारे में सोचते हैं। परमचंद के अनुसार, यह कच्चे रेशम का कंगन (शादी का कंगन) एक पवित्र धार्मिक कंगन है जो आपका हाथ कभी नहीं छोड़ेगा और यह प्यार और दयालुता की छाया है जो जीवन भर आपका साथ नहीं छोड़ेगी। हालाँकि, आधुनिक समय में विवाह से जुड़े रीति-रिवाजों और परंपराओं के कारण कई तरह की समस्याएँ पैदा हो गई हैं। सामाजिक स्तर पर विवाह एक सामान्य एवं प्राकृतिक घटना है।

भारतीय समाज में विवाह की आवश्यकता को बहुत महत्व दिया जाता है। यह न सिर्फ दो शरीरों का मिलन है, बल्कि दो आत्माओं का भी मिलन है। विवाह एक पुरुष और एक महिला के दो शरीरों को एक आत्मा में बदल देता है। इसके चलते पुरुष और महिला में कोई अंतर नहीं रह गया है, लेकिन हमारे समय में बेटे और बेटी की शादी का सवाल उठते ही परिवार के सदस्यों को परेशानी होने लगती है।

6. निष्कर्ष

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति का चित्रण इस प्रकार से मिलता है ।

- राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या को चित्रित करने का प्रयास किया है।
- राजेन्द्र यादव ने सांस - ससुर एवं बहू के माध्यम से पीढ़ी अन्तराल की समस्या को व्यक्त किया है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संदर्भ

- गुप्त विश्वम्भरदयाल उपन्यास का समाजशास्त्र , महेश जैन , श्री पब्लिशिंग हाउस , अजमेरी गेट
- प्रताप राजेन्द्र - हिंदी उपन्यास : तीन दशक , कौशल प्रकाशन , दरियागंज , नई दिल्ली 100002
- मिश्र पारसनाथ - मार्क्सवाद और उपन्यासकार : यशपाल
- भण्डारी माधवी (2007), राजेन्द्र यादव : कथा साहित्य के विविध आयाम, कानपुर: संस्करण
- यादव, राजेन्द्र (2007), उखड़े हुए लोग, नई दिल्ही: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
- यादव, राजेन्द्र (2019), सारा आकाश, नई दिल्ही: सारा पब्लिकेशन्स
- संस्करण, (1995), राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, कानपुर: चन्द्रलोक प्रकाशन
- सिंघ, अंजना (2005),राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education